शिक्षा के नये विषय

बहुत विचार करने के बाद मै इस र्निणय पर पहुचा हूँ कि जनसंख्या, भ्रष्टाचार व गन्दगी यह हमारे स्कूलो मे पढाई का वनाये जायं । आपको वह कारण जानने की इच्छा प्रबल हो रही होगी कि एसा क्या हो गया कि जिसकी वजह से एसा अनोखा प्रस्ताव रखा जा रहा है । पर आप इस बात से तो सहमत होगें कि भ्रष्टाचार,गन्दगी, जनसख्या भारत की तीन सवसे वड़ी समास्याएं हैं । हर जगहो पर इनकी चर्चा होती है लेकिन समाधान नही हो पा रहा है । अब आप उत्तेजित होगे कि क्या बात करते हे कि समस्या काहल न मिले नकि समस्या को ही ओढ लो । पर मै उसे दूसरे तरीके से आपके समाने रखना चाहता हूँ । जब हमे रोज मर्रा मे झूठ ही बोलना है भ्रष्टाचार फैलाना है, गन्दगी फैलाना है तो स्कूल मे सच बोलना, ईमानदारी और सफाई सिखाकर वच्चो को क्यो हम गुमराह कर रहे हैं । और एक पहलू है कि यदि हर वच्चे को पहले से ही इन तीनो समस्याओ का समुचित ज्ञान होगा तो हमारे भावी वच्चें सफल होने मे तो कामयाब होगें।

अब देखिये न कितनी बेरोजगारी है । कारण जनाना चाहते है ? भ्रषटाचार! सरकार के खजाने मे पहुचने से पहले रुपया तत्रं सेवको की जेबो मे चला जाता है, सरकार अपने सेवको को तनखा देने के लिये भी उधार लेकर काम चला रही है तो और अधिक आदमियो को काम पर कैसे रखें । परन्तु आप जानते है कि रिश्वत देकर, एक लाख मे इस तरह की, दो लाख मे उस तरह की, नौकरी कैसे आपको मिल सकती है । अब यह ात मुझे सुनने से पता चली पर यह पढाई का विश्य होता ता सबको पता रहता और सभी लोगो को नौकरिया ढूढने मे आसानी होती । इससे सभी लोग समपन्न होते। इसीलिये हम भ्रष्टाचार को पढाई का विषय बनाना चाहते है ताकि इस पर और अधिक रिर्सच हो सके और कान आसान हो जाये । शायद समस्याओ का समाधान मे ही नये व्यवसाय निकल आएं । बहुत से लोग भारत की समस्या का सबसे बड़ा कारण जनसख्या को मानते है लेकिन आकड़ो के वावजूद मुझे एक भी वच्चा, आदमी या ओरत दिखा दे जो आपके पूछने पर यह जवाब दे कि मै भारतीय हूँ चाहे यह सवाल आप भारत मे पूछे या अमरीका जैसे सूदूर देश में । जवाब मिलेगा मै फलानी जाति का हूँ, इस प्रान्त का हूँ, या अमीर, गरीब, ुकसन , डाक्टर या इंजीनियर हूँ । अतः आप भारत की किस जनसख्या की बात कर रहे है उतने तो अध्याय तो आपको वनाने ही पडेगे जैसे हिन्दुओ की, बंगालियो की, गरीबो की, आदि आदि । पिछली जन जातियो को न भूले जो इतने मतलबी है कि यदि एक उनमे से उपर उठ गया तो दूसरे के उत्थान के बारे मे क्यो सोचें यह भी अध्यन मे एक विषय होना चाहिये क्यो एसा है? जनसख्या के मामले म कुछ धर्मालिम्बियो का मत है कि यदि बह ज्यादा बच्चे पैदा नही करेगें तो उनका धर्म सख्या की दौड़ मे पिछड़ जायेगा और कही समाप्त ही न हो जाय ।उन सभी से मेरी प्रार्थना है कि यदि हमे सचमुच अपने परिवार को समपन्न बनाना है तो मानव मूल्यो और मानवीय धर्म का पालन करें व पूरे देश को समपन्न बनाने की कोशिश करें । अतः मानच धर्म भी पढाई का एक विषय होना चाहिये ।

जनसख्या और भ्रष्टाचार कम कैसे हों? क्योकि जब मारे भाई के वच्चा होता है या वह उपर की कमाई करता है तो यह खुशी का विषय है या उसकी जरुरतें हैं पर कल्लू के यहाँ लडका हुआ तो देखो व आबादी वढा रहा है, फलाना रिश्वत लेता है तो वह चोर है । हमे अपना मापदन्ड एक रखना होगा । घोटाले तो बहुत हो रहे है पर कहाँ से करु उनका इतिहास ? बहुत पुरानी बात है कि साठ लाख का स्टेट बैंक का घोटाला और जो लोग उसमे थे आज मंत्री तक बन चुके हैं । पता होता तो हम भी इन घोटालो की लाईन मे लग कर कही न कही तो पहुँच ही जाते । आपने भी सुना होगा कि राज्स्थान म बहुत से मवैशी बडी सख्या मे मर जाते है पर यदि इन्हे यह पता चल जाय कि चारे का घोटाला का पत होता तो लल्लू जो की पूछ पकडकर तर ही जाते । और बिना पढा लिखा आदमी भी तो सींग पूंछ विहीन पशु के समान ही है । वोफर कान्ड, एम यल ए कान्ड, स्टैम्प कान्ड, सरकारी कर्मचारियो के कान्डो की कहाँ तक चर्चा कौ जाय पर दाक तार , टेलीफून, विजली विभाग, रेलवें की चर्चा करे बिना रहा ही नही जा सकता है । आप भी इनमे कुछ तो और विभाग जोड़गे ही इसलिये मै सबको इस लेख मे लिखने बच रहा हूँ । पर होशियार लोगो को पता रहता है कि किसको लेने देने से काम चलता है ।परन्तु यदि इन बातो का ज्ञान जनसधारण को हो तो बेचारे स्नातक होने के बाबजूद अपने को असमर्थ पाते है निराश होने पर खुदखुशी कर लेते है । इसलिये आप मुझसे सहमत हो ही और इस सम्बन्ध मे एक ठोस कदम उठा डालिये ।

कुछ तथ्यो परमैं आपका ध्यान ले जाना चाहूँगा जो निम्नलिखित है :-

- भारत की जनसंख्या संसार मे दूसरे नम्बर पर है ।
- भ्रष्टाचार मे भारत का नम्बर नीचे से सातवाँ स्थान है
- भारत के नगर, शहर व गाँव गन्दगी के ढेर बनते जा रहे है
- हर रोज एक आदमी दिन मे 70 बार झूठ बोलता है
- भारत मे सबसे ज्यादा शिक्षित (डिग्री प्राप्त) है पर फिर भी बेरोजगारो की समस्या ज्वलन्त है
- भारत दूध के उत्पादन मे प्रथम है हम गाय की पूजा करते पर भैस का दूध पीते है दुनियाभर के चन्द देशो की तरह और हम भैस की तरह अढियल भी है
- भारत ने शून्य का ईजाद किया था पर आज किसी को इस बात पर विश्वास नही होता है
- भारत मे बहुत समय पहले शल्य किया से प्रत्यारोपड़ कला का प्रयोग होता रहा है गणेश जी श्री गणेश थे
- भारत मे पहला विश्वविद्यालय तक्षिला मे बना था

तो भारत को यदि हम पहले स्थान पर लाना चाहते है तो हम बच्चो से शुरु करें । एक कहावत है कि बच्चे कच्चे घडे होते है उन्हे जिस आकार मे चाहे ढाला जा सकता है । अतः अगर बच्चे देश का भविष्य हैं तो उन्हे इस तरह शिक्षित करना होगा कि वो देश को आगे ले जा सकें । भारत प्रजातत्रिंक राष्ठ्र है पर इसके वासी समदर्शी नही है । क्योकि हर आदमी यही चाहता है कि उसके बच्चे खूब पढे और बडे होकर ज्यादा से ज्यादा धन कमाये जैसे भी हो । पर भई हम यह क्यो नही चाहते कि हमारे पडसिी व मित्रो, रिस्तेदारो के बच्चे भी खूब कमाये । स्पर्धा है तभी तो । घर मे एक शब्द भी अग्रेजी का नही बोला जाता है पर अपने वच्चो को इंगलिश स्कूल मे पढाया जाता हैतो बच्चो मे मौलिकता एंव अपनी भावनाओं क्वे स्पष्ट रुप से कहने का आत्मविश्वास कहाँ से आयेगा इन हालतो के चलते ।
किसी कवि ने सही लिखा है कि तिफ्ल मे क्यो बू आये माँ बाप की डाक्टर जनवा गये तालीम है सरकार की ।
अपने परिवेश से होशियार बच्चो को दूर हटाना ही आज की शिक्षा मुख्य उदेश्य है । दिल्ली पब्लिक स्कूल अब गाँव गाँव मे खुल गये है लकिन पाठयक्रम मे स्थानिये परिवेश के अनुसार बदलाव के बिना परिणाम यही होगा कि अच्छे बच्चो को चुनकर जयपुर, अहमदाबाद, बंग्लौर, दिल्ली, कोलकत्ता, मुम्बई ले जाया जायेगा क्योकि उनकी प्रतिभा का कोई उपयोग गाँव, कस्बो मे नही है ना उन्हे समझाया जाएगा ।
सामजिक विषयो मे हमारी वर्तमान शिक्षा प्रणाली की जो स्थिति है उसके अनुसार जो हम उन्हे सिखाने की कोशिश करते है बच्चे उसका उल्टा करते है । जैसे किताबो मे लिखा है कि सफाई भगवान का दूसरा नाम है दीन दुखियो की सेवा नरायण सेवा है । इस पर आचरण हो रहा होता तो हमारी कई पीढी गन्दगी व गरीबी से लडने बाली पैदा हो गई होती । लेकिन इतना पढने के बाद भी हम सरकार व नौकरियो के लिये सरकार भरौसे बैठे है और यह विश्वास भी नही पैदा हुआ कि हम कुछ नया कर सकते लकीर से हटकर, तो कितनी कारगर है ऐसी पढाई जिसपर हम ईतना खर्च कर रहे है ? शायद अमरीका, इग्लैंड की मदद कर रहे है । इसका ज्वलन्त उदाहरण है क्मपूटर प्रोगामर जिन पर देश ने लाखो करोडो देश ने खर्च किये इसका देश मे कितना उपयोग हो रहा है भगबान हजाने या आप भी जानते होगे ही । मै तो इतना जानता हूँ कि ईन्टरनेट की विश्वासनीय सेवा दिल्ली जैसे शहरो तक मे उपल्बध नही है जिससे हम इस सेवा का लाभ रोज़मर्रा के कार्य कलापो को पूरा करने मे कर सकें ।
अब गन्दगी के सम्बन्ध मे भी एक दो जवाब सवाल हो जाए । गन्दगी करना हमारा जन्मसिध्द अधिकार है और सफाई काराना सरकार का काम है तो मै एक सवाल आपसे पूछू कि आपने पिछले छः दशक मे कोई काम जिसे राकार ने किया ठीक होते देखा है या पूरा करने मे सक्षम है ? यदि नही तो क्यो उसके सहारे बैठे है ? तो इतनी गन्दगी बढा लीजिये कि सडक पर जब आप चले तो ऐसा लके कि कूढे के कलीन पर चल रहे है । आपने पानी की वर्षा होते सुना होगा पर हमने सब्जीयो के छिलको की गन्दे पानी की और तरह तरह के कूढो की वर्षा होते देखा है, अपने भी देखा सुना या भुगता होगा । इसकी हमारे यहाँ इतनी स्वतंत्रता है कि जब जी चाहे थूक दिजिये या कूढा डाल दीजिए वह गायो के चारा बन ही जायेगा और आपको बहुत पुन्य मिलेगा और भारत की हर गाय आपको तहे दिल से दुआदेगी

आप सोचते होगे कि इसमे हम क्या कर सकते है और हम अपनी सरकार से यह भी आपेक्षा नही कर सकते है? पर याद रक्खे कि जो काम सरकार से करयेगे तनि गुना महगाँ होगा । कूढे से विजली बनाई जा सकती है पर हम ज्यो करे इस दिशा मे पहल? त्भी तो मै कहता हूँ गन्दगी को पढाई का विषय बना दीजिये तो यह भी शायद साफई मे बदल जाय या साफ हो जाय यदि इस पर रिर्सच होने लगे तो । इससे हमारा स्वास्थ ही सुधरेगा और नई नई सम्भावनाये बढेगी कूढे के कम्पैकटर बनाना, कूढा गाडी बनाना, किससे इनको इधर उधर ले जाकर विजली गैस आदि बन सके । एसा किसने बताया है है कि सिर्फ पानी से ही सफाईहो सकती है सडको की, घरो की दबी हुई हवा से भी यह सम्भव है । पानी की देश मे वैसे ही किल्लत है । कूढे के बारे मे देहादून मे कई कलोनियो मे कूढा कंकड घरो से उठाकर बायोडिसपोज़ैविल की खाद बनाते ई तथा लोहा लंगड वेचकर उठाने बाले पैसा वनाते है यह सफल व्यवसाय के रुप मे किया जा रहा है । मुम्बई मे भी कूढे से खाद बन रही है हमने सब्जीमंडी के कूडे से गैस बनते SPRERI बलल्भ भाई विद्या नगर गुजरात मे देखी है । अधिक जान कारी के लिये उनकी वेब साईट देखे। यह सब बाते आम जनता को कैसे पता चलेगी यदि यह पढाई के विषय नही बनाये गये तो, हम तो बहुत जगह जाते है तो यह बाते हमे पता चल जाती है और हम गांब गांब मे इसकी चर्चा करते है क्यो ?कब? कहां? कैसे? यह तो अध्याय व पढाई के जरुरी विषय होने ही चाहिये ।

अन्त मै आपसे मै यहि कहूगां ीक यदि आप मुझसे सहमत नही है तो मुझे बडी ही खुशी है कि आप एक अच्छे नागरिक ही नही अच्छे व्यक्ति भी है जो सफाई, स्वस्थ समाज, व सुव्यवस्थित तंत्र और छोटे परिवार म विश्वास रखते है । मैने जो आपका कीमती समय बरबाद किया उसके लिये क्षमा चाहता हूँ । आशा है कि आप भारत की उन्नति के लिये प्रार्थना करेगें । मुझे भी अपना मत छोडकर आपके साथ प्रार्थना करनी ही होगी कि भगवान मेरे भार के नागरिको को एक स्वतंत्र, स्वच्छ समाज व सम्पन्न तथा कार्य कुशल सरकारी तंत्र दे जो हर भारत के नागरिक को सम्मानिये जीवन की सम्भावना प्रदान कर सकें ।
रश्मि उमेश रोहतगी दस जुलाई दो हजार दो नौवी मिचिगन अमरीका

Umesh Rashmi Rohatgi 24161 Nilan Drive Novi MI 48375 USA phone ☹248) 471-5786
Web page : www.rurohatgi.com email : rurohatgi@yahoo.com